मोहम्मद ﷺ नबी और रसूल हैं

- अल्लाह तआला ने हज़रत मुहम्मद ﷺ को 40 साल की उम्र में नबी और रसूल बनाया!
- नबी यानी जिस के पास अल्लाह से "نَبَأ" यानी खबर आये!
- रसूल यानी जिस के पास अल्लाह से ख़बर भी आये और किताब भी (जैसे क़ुरआन)

मक्की दौर

- नुबुव्वत का ऐलान करने के बाद आप ﷺ मक्का में 13 साल तक इस्लाम की दावत देते रहे!
- इस को हम मक्की दौर कहते हैं, और सालों को नबवी साल (1नबवी से 13नबवी तक)

मदनी दौर

- मक्का में 13 साल तक दीन की दावत देने के बाद आप ﷺ ने मदीना हिजरत फरमाई,
- वहां आप ने 10 साल तक दावत व तब्लीग करते रहे!
- इस दौर को मदनी दौर कहते हैं, और सालों को हिजरी साल (1हिजरी से 10हिजरी तक)

सीरत

दुआ

इआदह (सीरत)

- अल्लाह ने मुहम्मद ﷺ को 40 साल की उम्र में नबी और रसूल बनया!
- मक्का में आप ﷺ ने 13 साल तक दावत दी, इसी को मक्की दौर कहते हैं!
- मदीना में आप ﷺ ने 10 साल तक दावत दी, इसी को मदनी दौर कहते हैं!

इआदह (दुआ)

- दुआ के ज़रिये ज़िन्दगी को अल्लाह की याद से ज़्यादा आबाद रखने का मौक़ा मिलता है!
- सुबहानल्लाहि व बिहम्दिही 100 मर्तबा पढ़िए और गुनाहों से माफ़ी और अज्र पाइए!!

सीरत क्यों पढ़ें?

1. आख़िरत की कामयाबी के लिए!

- आख़िरत की कामयाबी के लिए अल्लाह की बात मानना और मुहम्मद ﷺ की इत्तिबा मुहब्बत के साथ करना ज़रूरी है, और उस के लिए सीरत को पढ़ना ज़रूरी है!

सीरत क्यों पढ़ें?
2. दुनिया की कामयाबी के लिए!

आप ﷺ के पास दुनिया की कामयाबी के लिए बेहतरीन लाइफ स्किल्स थीं! ये बड़ी बेवक़ूफ़ी होगी कि हम फ़क़ीरों के पास कामयाबी के राज़ ढूँढें और जो इंसानी तारीख़ में सब से कामयाब हो, उसी को ना पढ़ें!

सीरत क्यों पढ़ें?

3. रसूल ﷺ से मुहब्बत पैदा करने के लिए

जब हम मुहम्मद ﷺ की कुर्बानियों को जानेंगे तो हम दिल से मुहम्मद ﷺ से मुहब्बत करेंगे!

सीरत

दुआ

इआदह (सीरत)

सीरत क्यों पढ़ें?

1. आख़िरत की कामयाबी के लिए!
2. दुनिया की कामयाबी के लिए!
3. रसूल ﷺ से मुहब्बत पैदा करने के लिए

इआदह (दुआ)

- दुआ के ज़रिये हम हर वक़्त और हर हाल में अपने दिल का हाल अल्लाह के सामने रख सकते हैं!
- "सुबहानल्लाहि व बिहम्दिही सुबहानल्लाहिल अज़ीम" ज़बान पर हलके फुल्के हैं, मीज़ान में इन्तिहाई वजनी और अल्लाह को बहुत पसंद हैं!

सीरत क्यों पढ़ें?

4. रसूल ﷺ की अज़मत पैदा करने के लिए

जब हम मुहम्मद ﷺ के अज़ीम कारनामों को जानेंगे तो दिल में आप ﷺ के लिए अज़मत पैदा होगी!

सीरत क्यों पढ़ें?
5. सहाबा ए किराम रज़ियाल्लाहू अन्हुम की ज़िन्दगी को जानने के लिए

सहाबा की ज़िन्दगी में ज़बर्दस्त तब्दीली आई! कैसे? सहाबा रज़ियाल्लाहू अन्हुम मुहम्मद ﷺ से क़ुरआन सीखते, उस पर गौर करते और अमल करते! साथ ही साथ आप ﷺ की बेहतरीन क़ुरआनी ज़िन्दगी से असर लेते!

सीरत क्यों पढ़ें ?
6. क़ुरआन को समझने के लिए

अल्लाह ने आप ﷺ पर 23 सालों में क़ुरआन उतारा है ज़िन्दगी के मुख़्तलिफ हालात में! इन हालात को सीरत के ज़रिये मालूम किया जा सकता है! इस तरह से क़ुरआन को समझने में मदद मिलेगी!

सीरत

दुआ

इआदह (सीरत)

सीरत क्यों पढ़ें ?

4. दिल में रसूल ﷺ की अज़मत पैदा करने के लिए!
5. सहाबा ए किराम रज़ियाल्लाहू अन्हुम की ज़िन्दगी को जानने के लिए
6. क़ुरआन को समझने के लिए

इआदह (दुआ)

- दुआ व ज़िक्र से हम ज़ेहनी तनाव (stress), मायूसी और गम से छुटकारा पा सकते हैं!
- اَللهُ أَكْبَر: अल्लाह तआला क़ुव्वत, इज़्ज़त, शान व शौकत और हर अच्छी सिफत में सब से बड़ा है!
- اَللهُ أَكْبَر: फज्र की अज़ान सुन कर अगर मै सोता रहूँ तो मै ने किस को बड़ा माना? किस की बात सुनी? अल्लाह की या नफ्स की?

सीरत क्यों पढ़ें?
7. क़ुरआन पर अमल करने के लिए

क़ुरआन थ्योरी है और सीरत उस का बेहतरीन अमली नमूना या माडल! आप ﷺ के अख्लाक, मुआमलात और सारे आमाल क़ुरआन की अमली तफ्सीर हैं!

सीरत क्यों पढ़ें?

8. अपने ईमान को और अल्लाह के साथ अच्छी उम्मीदों को बढ़ाने के लिए

आप ﷺ ने अल्लाह के भरोसे सख्त तरीन हालात में बड़ी कामयाबियां हासिल की, इसे जान कर अल्लाह अल्लाह की मदद पर और मुहम्मद ﷺ के रसूल होने पर ईमान बढ़ता है!

सीरत क्यों पढ़ें?
९. दिल की ख़ुशी और सुकून के लिए

आप इस काइनात के बेहतरीन इन्सान के बारे में पढ़ेंगे तो यक़ीनन आप को ख़ुशी होगी और दिल को सुकून मिलेगा!

सीरत

दुआ

इआदह (सीरत)

सीरत क्यों पढ़ें?

7. क़ुरआन पर अमल करने के लिए!
8. अपने ईमान को और अल्लाह के साथ अच्छी उम्मीदों को बढ़ाने के लिए!
9. दिल की ख़ुशी और सुकून के लिए!

इआदह (दुआ)

- दुआ और ज़िक्र के ज़रिये उम्मीद, सुकून और इत्मीनान हासिल होता है और मोड में हमेशा ठहराव (self control) रहता है!
    - दुनिया व आख़िरत की नेअमतें हासिल करने के लिए "اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لِيْ وَارْحَمْنِيْ وَاهْدِنِيْ وَعَافِنِيْ وَارْزُقْنِيْ" पढ़िए!
- नेकी करना और गुनाह से बचना अल्लाह की तौफ़ीक़ व इहसान ही से मुम्किन है! (لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللهِ)